5 ब्रह्मपुत्र पर एक स्टीमर-यात्रा

द्वितीय महायुद्ध से पहले कभी-कभी लोग अपनी छुट्टियां मनाने के लिए कलकत्ता में हुगली नदी के घाट से लेकर उत्तरी आसाम तक, ऊपर की ओर, स्टीमर में बैठ कर यात्रा करते थे। जिन लोगों को उस स्टीमर पर बैठने का सौभाग्य प्राप्त होता था वे उस आनन्द-यात्रा को कभी नहीं भुला सकते थे।

स्टीमर को कलकत्ते के कम भीड़भाड़ वाले घाट पर लगा दिया जाता था और यात्री आराम से आते थे। एक कर्मचारी उनका सब प्रवन्ध करता था। वही खाना भी पकाता था और रास्ते में पड़ने वाले बाजार-हाट से मछली, अंडे, मुर्गियां, ताजा दूध, फल, सब्जी आदि खरीदता जाता था और यात्रियों को बहुत स्वादिष्ट भोजन खिलाता था।

यह यात्रा बड़ी सुखद होती थी और केबिन में रहनेवाले यात्री स्टीमर की ऊपरी छत पर, बांस की कुर्सियों पर बैठ कर, दोनों ओर बढ़ते हुए नदी के किनारों को और रास्ते में होनेवाले हर छोटे-मोटे परिवर्तन को निहारा करते थे। पेड़, खेत, किनारों पर बनी हुई झोंपड़ियां, विभिन्न प्रकार के लोग और बिक्री के लिए लायी जानेवाली उनकी वस्तुएं, सब बदलती जाती थीं।

कलकत्ते से बंगाल की खाड़ी 144 किमी० दूर है, किन्तु छोटा स्टीमर समुद्र तक नहीं जाता था। नामकना नामक संकरी नहर के मुख तक पहुंचने में ही इसे आधा दिन लग जाता था। केबिन के यात्रियों के अतिरिक्त स्टीमर की छत पर, यानी कम पैसों में यात्रा करनेवाले, लोग भी थे। जहां भी स्टीमर रुकता था, इनमें से कुछ उतर जाते थे और कुछ नये यात्री चढ़ जाते थे। कुछ देर तक थोड़ी चहल-पहल रहती थी। बोर्ड पर धूम-धड़ाका होता, जंजीरों की खनखनाहट होती और यह छोटा-सा स्टीमर फिर आगे चल पड़ता।

स्टीमर के दोनों ओर खूब भरे हुए केबिन होते थे। अब नहर में, जिसमें मुश्किल से स्टीमर के जाने लायक मार्ग होता था, बहुत सावधानी से उसे ले जाया जाता था। इसमें बहुत देर लगती थी क्योंकि हमें ज्वार के आने की प्रतीक्षा करनी पड़ती थी, नहीं तो स्टीमर वहीं फंस जाता। ये वास्तव में समुद्र के ज्वार-भाटे होते हैं। कलकत्ते से मीलों दूर तक इन्हें लगातार आते-जाते देखा जा सकता है।

अब यात्री किनारों पर बने हुए खेत और झोंपड़ियां देख सकते थे। इस स्थान से चार घंटों की नौका-यात्रा के बाद सुन्दरवन तक पहुंचा जा सकता था।

यह रास्ता बहुत सी संकरी तथा चौड़ी नहरों के बीच से होकर जाता था। यह इतना गहरा और संकरा था कि जो लोग इन स्टीमरों को चलाते थे, उन्हें इसका विशेषरूप से अभ्यास कराया जाता था। यह यात्रा बड़े मज़े की होती थी। कभी-कभी यात्रियों को लंगूर, हिरन, धूप सेंकते हुए मगरमच्छ और पानी पीते हुए डरावने किन्तु खूबसूरत शेर दिखायी देते थे।

धीरे-धीरे स्टीमर छोटे जलमार्गों से होकर, चौड़ी नदी पद्मा तक पहुंचता था जो गंगा और ब्रह्मपुत्र का पानी समुद्र तक पहुंचाती है। इसका काफी बड़ा भाग अब पूर्वी पाकिस्तान की सीमा में है।

दूसरे दिन काफी रात होने पर स्टीमर खुलना पहुंचता था। कभी-कभी नदी के घने कुहरे के कारण इसे रुक जाना पड़ता था। आगे बढ़ना काफी खतरनाक था, क्योंकि उधर से आनेवाली नाव से टक्कर हो जाने की संभावना रहती थी। चौड़े जलमार्गों पर हमेशा नावें आती-जाती रहती थीं।

तेज लहरों से जूझता हुआ स्टीमर आगे बढ़ता जाता था। कहीं-कहीं मछली पकड़नेवाली या भूसा और अनाज से लदी हुई नावें मिल जाती थीं। किनारों पर स्नान करने के लिए ईंट और सीमेंट के घाट बने हुए होते थे। इस धारा को यहां पर मधुमती अर्थात् शहद की धारा कहते हैं।

दो दिन बाद स्टीमर बरीसाल पहुंचता था जो नदी का एक बड़ा बन्दरगाह है। बरीसाल के निवासी यात्रियों से वहां की बन्दूकों के धमाके सुनने को कहते थे। ये बन्दूक के धमाके नहीं, बल्कि एक रहस्यपूर्ण आवाज़ थी और बिल्कुल बंदूक के धमाके जैसी लगती थी। अभी तक कोई भी इसके कारण का पता नहीं लगा सका है। शायद इसका कुछ सम्बन्ध वहां की धाराओं और ज्वार-भाटे से है।

अब धीरे-धीरे नदी का रूप बदलता गया। बालू की जगह मिट्टी के, जगह-जगह से ऊबड़-खाबड़ और टूटे-फूटे, किनारे मिलते हैं। स्टीमर बार-बार सामान उतारने और चढ़ाने के लिए रुकता था। उस समय ताज़ी सब्जियां, मछलियां और खजूर के रस से लदी हुई छोटी-छोटी डोंगियां वहां आती थीं।

स्टीमर गुआलुन्दो, जहां गंगा और ब्रह्मपुत्र के संगम के बाद उसे पद्मा कहते हैं, को पार करके, बहाव की विपरीत दिशा में, उत्तर की ओर, बढ़ता जाता था। अब गंगा के किनारे बालू नहीं दिखायी देती थी। यही वास्तविक ब्रह्मपुत्र की धारा है जो दूर तिब्बत से नीचे आती है।

किनारों पर छोटे-छोटे हरे-भरे बाग दिखायी देने लगते थे, जिनमें

पुष्ट पीले केलों से भरे वृक्ष होते थे। रुपहली बालू और सफेद अथवा रंग विरंगी पालोंवाली नावों पर सूर्य की किरणें चमकती थीं।

बेंत की कुर्सियों पर बैठे हुए यात्रियों को कोई रेल की पटरी अथवा स्टेशन नहीं दिखायी देता था। ऐसा लगता था जैसे सभी यातायात नावों द्वारा ही होता है। नावें सभी प्रकार का सामान--कपड़ों के गट्ठर, मिट्टी के तेल के पीपे, रंग, छड़ें, बाल्टियां तथा अन्य बर्तन ले जाती थीं। यह सब सामान दूर-दूर बसे हुए छोटे-छोटे गांवों और नगरों के लिए होता था।

स्टीमर चिलमड़ी नामक एक छोटे से स्थान से होकर गुजरता था। एक समय में यह स्थान पीतल की चीजों के लिए प्रसिद्ध था। अब यात्रियों को केवल किनारों पर लगे हुए जूट के ढेर दिखायी देते थे। चिलमड़ी के पश्चात् नदी फिर संकरी हो जाती है और बालू के लम्बे और पतले किनारे दिखायी देते हैं। जिस स्थान पर प्रवाह तेज नहीं होता वहां नदी बालू छोड़ती हुई आगे बढ़ जाती है। इसी प्रकार बालू के किनारे बनते हैं।

अब जहाज जटरापुर पहुंचा, जहां आसाम की सीमा का प्रारम्भ दिखायी पड़ने लगता है। थोड़ी दूर आगे बढ़ने पर ढुबरी नामक पुराना और मशहूर नगर है। यह बहुत सुन्दर जगह है और नदी के इतने किनारे पर है कि लगता है कि वहां की इमारतें किसी भी समय पानी में गिर पड़ेंगी। ढुबरी की मछलियां, पद्मा नदी में पायी जानेवाली हिलसा की तरह स्वादिष्ट होती हैं और रसोइये अक्सर इन्हें खरीद लेते थे।

धीरे-धीरे नदी के किनारे पहाड़ियां नजर आने लगती थीं। पेड़ों और लताओं से भरी होने के कारण वह गहरे हरे रंग की दिखायी देती थीं। जाड़ों में नदी इतनी शान्त रहती है कि लहर भी दिखायी नहीं पड़ती। केवल सुगंधित फूलों के गुच्छे पानी में बहते हुए चले जाते हैं। पहाड़ियां और पास आ जाती हैं और तीन चोटियों वाला पर्वत सबसे ऊंचा दिखायी पड़ता है।

जब स्टीमर गोलपाड़ा से गुजर गया तो पहाड़ियां भी ग्रोझल हो गयीं। वह पलासवाड़ी में जाकर रुक गया। भूमि पर लोग ग्रंडे, जिन्दा कबूतर ग्रौर पके हुए सन्तरे बेच रहे थे। तिरछी ग्रांखों ग्रौर मुस्कराते चेहरे वाले यहां के लोग भी भिन्न प्रकार के थे।

ग्राखिर स्टीमर पांडु-घाट जा पहुंचता। यहां ग्रासाम के पहाड़ी नगर शिलांग को जाने वाले यात्री उतर जाते थे। यह एक सुन्दर स्थान था जहां दूर पर नीली पहाड़ियां दिखायी देती थीं ग्रौर नदी के पानी में इनकी छाया द्वीपों की तरह दिखायी देती थी। लहरों में समुद्री चिड़ियां खेलती हुई दिखायी देतीं थीं ग्रौर उनके शरीर से टपकती पानी की बूंदें सूर्य की रोशनी में सुनहरी लगती थीं।

रात में यहां से गोहाटी की रोशनी देखी जा सकती थी। यहां कोहरे से घिरी हुई पहाड़ियां थीं। ग्रब स्टीमर उमानन्द भैरव से गुजरता ग्रौर भुरभुरे पत्थर की उसकी नींव नदी में से ऊपर की ग्रोर उठती सी लगती थी। भैरव के मन्दिर के शिखर ग्रब जहाज़ की छत से साफ-साफ दिखायी पड़ने लगते थे।

यहां पर बड़ी खतरनाक भंवर होती है जिनके कारण बहुत सी नावें उलट चुकी हैं। यहां पर धारा बड़ी गहरी ग्रौर तेज़ होती है।

ग्रन्त में स्टीमर गोहाटी पहुंचा। यह एक बड़ा ग्रौर व्यस्त नगर है जो पुराने समय में भी प्रसिद्ध था। उसके पास ही एक पहाड़ी पर विश्व-विद्यालय ग्रौर प्राचीन तीर्थस्थल कामाख्या का मन्दिर भी है।

प्राचीन काल में उस प्रदेश के लोग देवी की पूजा करते थे ग्रौर उससे डरते भी थे। कोई भी व्यक्ति उस पवित्र पहाड़ी पर रात बिताने का साहस नहीं करता था। रात में वहां रहना खतरनाक माना जाता था। किन्तु समय के साथ-साथ यह ग्रंधविश्वास भी दूर हो गया है।

लोहित नदी के आगे, स्टीमर से उतर कर, उत्तर की ओर पैदल जानेवाले यात्री के लिए इस बात पर विश्वास करना कठिन था कि हिमालय की गोद से तेज गर्जन के साथ जो नदी बहती चली आ रही है, यह वही नदी है जिसमें उसने इतने दिनों तक यात्रा की थी। अंतिम विश्राम-स्थल ढुवरी ही था, क्योंकि इसके बाद नदी के तेज़ बहाव को चीर कर आगे बढ़ना किसी भी स्टीमर के लिए सम्भव नहीं था ।



रु. 14.00 ISBN 81-237-0866-1

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

